INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in November 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

# स्वयं प्रकाश के कथा साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का परिवर्तन

सरस्वती कुमारी मीणा, शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली यूनिवर्सिटी
डॉ अशोक कुमार, सह - प्राध्यापक, हिंदी विभाग, दिल्ली यूनिवर्सिटी

**सार**

*उपन्यास में यथार्थवाद सच की खोज करने की कोशिश करता है। वह इस मान्यता पर आधारित है कि मानव जीवन का सच मानव और समाज से उसके सम्बन्ध के बोध के माध्यम से ही पाया जा सकता है। नगरीय जीवन में तो बहुत ही शीघ्र गति से परिवर्तन और विघटन हो रहा है शिक्षा, वैज्ञानिकता, भौतिक सुविधा आदि के कारण मनुष्य अधिकाधिक संवेदनाहीन बन रहा है। इसी कारण मनुष्य में स्थित करुणा, प्रेम, आत्मीयता लुप्त हो गई है और उसका स्थान स्वार्थीवृत्ति, क्रूरता, टूटन आदि ने लिया है। व्यक्ति स्वातंत्र्य और अधिकार की भावना तथा परिवार विघटन के कारण गाँव, घर टूट रहे हैं अन्याय–अत्याचार और शोषण की नित नई प्रणालियाँ एवं विकृत मानसिकता और विसंगतिपूर्ण व्यवहार से मानवीय जीवन विषमय बन गया है। ग्रामीण जीवन में आधुनिक मनोरंजन के साधनों द्वारा नई नगरीय संस्कृति और सभ्यता ने आक्रमण किया है। स्वयं प्रकाश के उपन्यासों में धार्मिक युगबोध का समावेश भी हुआ है। स्वयं प्रकाश ने धर्म के नाम पर पनप रही विसंगतियों पर कुठाराघात किया है। बीच में विनय उपन्यास में उन्होंने धर्म का विषय उठाया है– विनय के पापा जिस कारण से धार्मिक जीवन को आत्मसात करते हैं वह यह दर्शाता है। कि धर्म किस प्रकार हताश, निराश व आत्महंता और आत्म अपराध बोध से ग्रस्त व्यक्ति के तमाम तरह के अमानवीय व्यवहार को वैधता प्रदान करता है।*

**कुंजी शब्द: सामाजिक, सांस्कृतिक, मूल्यो ं, परिवर्तन**

## परिचय

कथा – साहित्य की रचना के लिए यथार्थ प्राण तत्त्व है। इसके अभाव में कथा रचना विश्वसनीय नहीं हो पाएगी। इसलिए कहा भी जाता है कि उपन्यास में नाम के सिवा सब कुछ यथार्थ होता है। उपन्यास के लिए यथार्थवादी दृष्टि की आवश्यकता पर विचार करते हुए सर्वप्रथम आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी याद आते हैं जिन्होंने उपन्यास के लिए यथार्थवाद की महत्ता प्रतिपादित करते हुए एक निबन्ध में कहा है कि मैं यथार्थवाद का विरोधी नहीं हूँ। उलटे, जैसा कि मैं आगे स्पष्ट करने जा रहा हूँ, उपन्यास नामक साहित्यांग के यथार्थवादी होने में ही उसकी सफलता मानता हूँ। कविता यथार्थ की उपेक्षा कर सकती है, संगीत यथार्थ को छोड़कर भी जी सकता है, पर उपन्यास और कहानी के लिए यथार्थ प्राण है। उसके न रहने से उपन्यास और कहानी भी प्राणहीन वस्तु बन जाती है। वस्तुतः यथार्थवाद आज के उपन्यासकारों की आवश्यकता है।

## उपन्यास में यथार्थवाद

उपन्यास में यथार्थवाद सच की खोज करने की कोशिश करता है। वह इस मान्यता पर आधारित है कि मानव जीवन का सच मानव और समाज से उसके सम्बन्ध के बोध के माध्यम से ही पाया जा सकता है। जिस उपन्यासकार की यथार्थवाद पर जितनी गहरी पकड़ होगी, वह जीवन के सच का साक्षात्कार भी उतनी ही गहराई से कर पाएगा और उसकी कृति उतनी ही विश्वसनीय बन पाएगी। समाज की जड़ता खत्म कर रचनात्मकता और क्रियाशीलता पैदा करने के लिए यथार्थवाद नितान्त जरूरी उपक्रम है।

सामाजिक यथार्थ और सच की अभिव्यक्ति के लिए यथार्थवाद की आवश्यकता महसूस करते हुए प्रतिष्ठित आलोचक मैनेजर पाण्डेय ने कहा है– समाज के ज्ञान की आवश्यकता उन्हें होती है जो समाज को बदलकर उसे बेहतर बनाना चाहते हैं। यथार्थवादी उपन्यास ऐसे लोगों को सामाजिक वास्तविक और सच्चाई का ज्ञान देकर उन्हें क्रियाशील बनाता है। इसलिए जो यथास्थिति के पोषक हैं वे यथार्थवाद के विरोधी होते हैं। आज के समय में यथार्थवाद पहले से अधिक जरूरी है। पाण्डेय जी के इस कथन के आलोक में कहा जा सकता है कि प्रतिबद्ध उपन्यासकार के लिए यथार्थवाद नितान्त आवश्यक है। यथार्थवादी दृष्टि लेखक को समाज के प्रति अधिक जिम्मेदार बनाती है।

कथाकार स्वयं प्रकाश समाज ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को सुन्दर बनाने हेतु प्रयत्नशील हैं, जिसके पीछे काम करती है यथार्थवादी दृष्टि इसी दृष्टि के कारण उन्हें हमेशा यह चिन्ता बनी रहती है कि यह दुनिया रहने लायक और अधिक सुन्दर कैसे बनेगी। अपने कथा–साहित्य में वे इसी के लिए संघर्ष करते नजर आते हैं। अपने लेखन काल में उन्होंने पाँच उपन्यासों की रचना की है। उन सभी में हमें उनकी यथार्थवादी दृष्टि के दर्शन होते हैं।

## स्वयं प्रकाश के कथा साहित्य में पारम्परिक और पारिवारिक मूल्य

समय सत्य कहानी एक ऐसे परिवार की कहानी है जहाँ जो पैसा कमाता है वही घर का मालिक होता है। जहाँ पिता पुत्र का सम्बन्ध कोई मायने नहीं रखता। यह घटना सामान्य सी लगती है पर अपने में अपनों की तड़प को समेटे हुए है, जो जानलेवा भी है। पहले राकेश के पिताजी की चलती थी पिताजी कमाते थे, तब उनके नाम से सारा घर काँपता था। वे रिटायर्ड हुए और भाई साहब नौकर हुए तो जैसे अपने आप सारी सत्ता भाई साहब के हाथों में आ गयी। मुझे वह दिन याद है जब एक दिन भाई साहब को पाव भर दूध रोज दिया जाने के लिए बूढ़े पिताजी का दूध बंद कर दिया गया था।

और अब राकेश भी कमाने लगा है। इसलिए वह अपने निर्णय स्वयं लेगा, वह रचना से प्यार करता है और उसी से शादी भी करेगा। जैसे ही भाई साहब बहन की शादी की बात करते हैं, तो वह साफ कह देता है मैंने फैसला कर लिया है, भाई साहब।... मीरा की शादी में मुझसे जो बन सकेगा करूँगा, लेकिन दहेज के लिए भूखों के पेट पर लात नहीं रखी जाएगी मुझसे, आप दस बजे वाली गाड़ी से चले जाइये।... भाई साहब जड़ हो गए।

नन्हा कासिद इस कहानी में लेखक ने पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी में संवेदनात्मक स्तर पर कितना अन्तर आ गया है उसी को दिखाया है। आज की पीढ़ी भावना और प्रेम को तनिक भी महत्व नहीं दे रही है। प्रेम करने वाले इनको बेवकूफ लगते हैं। नई पीढ़ी सिर्फ पैसे को महत्व देना जानती है, पैसे के जरिए आगे बढ़ने को महत्व दे रही है। साथ ही बदले हुए समय का यथार्थ अपनी नग्न अश्लीलता में उभर आता है।

'मंजू फालतू' कहानी में स्वयं प्रकाश बार–बार यह बात साबित करने की कोशिश करते ह ं कि जिस तरह नई टेक्नालॉजी पुरानी को फालतू बनाती जाती है, उसी तरह ही अब हर नई पीढी पुरानी पीढी को गैर जरूरी बनाने में लगी है। व्यक्ति की उपयोगिता तब तक ही कायम रह पाती है जब तक वह समय के अनुरूप स्वयं को बनाये रखने में समर्थ रहता है। पिछड़े, अशक्त, असमर्थ व्यक्ति के लिए इस व्यवस्था में कोई जगह नहीं है। पुरानी सोच, पुरानी मान्यताएँ, पुराने मूल्य जिन्हें कभी महत्व दिया जाता था, नई व्यवस्था ने उस सब को खारिज कर दिया है। वे अब एक तरह की डिस्क्वालिफिकेशन बन गए हैं।

## मध्यमवर्गीय में पूँजीवादी व्यवस्था

प्रत्येक समाज में अनेक वर्ग होते हैं इन वर्गों के हित भी अलग होते हैं। वर्तमान समाज आर्थिक दृष्टि से तीन श्रेणियों में विभक्त है उच्च वर्ग, मध्य वर्ग तथा निम्न वर्ग गध्यवर्ग वरतुतः पूँजीपति तथा गजदूर वर्ग के बीच का वर्ग है, जो न तो इतना अधिक धनवान है कि उद्योगों को चला सकें न इतना गरीब है कि पेट भरना मुश्किल हो।

समाज के पूँजीपति (उच्च) वर्ग व शोषित वर्ग में हमेशा संघर्ष होता रहता है। इस संघर्ष में मध्यवर्गीय व्यक्ति मजदूरों के साथ मिलकर अपनी मध्यवर्गीय हस्ती को बनाये रखने के लिए पूँजीपति वर्ग से लोहा लेते हैं।

मध्यवर्ग के विशिष्ट चिन्ह धन और अर्जित सम्पत्ति को माना जाता है और विशेषकर उसको एकत्र करना, संग्रह करना और उपयोग करना मध्यवर्ग की प्रमुख पहचान है। हिन्दी साहित्यकोष में मध्यवर्ग की विशेषताओं और उसके व्यक्तियों के स्वरूप की चर्चा करते हुए कहा गया है– मध्यवर्ग सामन्तवादी व्यवस्था में नहीं पाया जाता है, क्योंकि उस समय जमींदार तथा किसान का सीधा संबंध था, किन्तु पूँजीवादी व्यवस्था ने समाज को इतना जटिल बना दिया कि एक मध्यवर्ग की भी आवश्यकता हुई जो उस जटिल व्यवस्था के संघटन सूत्र को सम्भाल सके। इस वर्ग में नौकरी–पेशा, शिक्षक, क्लर्क आदि अन्य हैं। और सामाजिक क्रान्ति के प्रायः समस्त विचारों का सर्जन मध्यवर्ग में होता है।

स्वयं प्रकाश के कथा – साहित्य में जीवन यथार्थ लगातार मुखर होता जाता है, उनमें खासकर मध्यवर्गीय यथार्थ अधिक बारीकी से उपस्थित है। सरबजीत ने लिखा है श्स्वयं प्रकाश मध्यवर्गीय जनसामान्य की आदतों स्वभाव व संस्कारों, जो कि मानसिकता को अभिव्यक्त करता है से अपनी कहानियों का माहौल निर्मित करता है। अन्ततः वह इस बुर्जआ किस्म के मध्यवर्गीय चेतना से ग्रस्त व्यक्ति की मानसिकता पर महसूस करवाने की हद तक चोट करता है। ये साधारण और बारीक बुनावट केन्द्रीय कथ्य के समानांतर चलती है, इसी कारण एक प्रकार की सरलता व सहजता स्वयं प्रकाश की कहानियों में फैली है।

स्वयं प्रकाश की कहानियाँ मध्यवर्गीय समाज की असंगतियों, उनके असंतोष, उनके सपनों, उनकी आशा–निराशाओं को व्यक्त करती है। स्वयं प्रकाश कहते हैं कि श्आजादी के बाद भारतीय मध्यवर्ग का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है। एक ठीक–ठाक से पानवाले से लगाकर किसी मँझोली कंपनी के सी.ई. ओ

तक सब मध्यवर्ग हैं और आज तो सारी दुनिया के व्यापारी इनकी तरफ ललचाकर देख रहे हैं। जिन्दगी का सारा ड्रामा इसी में है। यह ठीक है कि प्रेमचंद में किसानों के और ग्रामीण जनता के अधिक प्रामाणिक चित्र हैं और टॉलस्टॉय में तो उत्पादक वर्ग और प्रभुवर्ग दोनों के प्रामाणिक चित्र हैं, लेकिन उनकी दुनिया का भी काफी आयतन मध्यवर्गीय पात्रों ने घेर रखा है।

## अध्ययन के उद्देश्य

1. स्वयं प्रकाश के कथा साहित्य में पारम्परिक और पारिवारिक मूल्य का अध्ययन
2. वर्तमान काल में स्त्री की स्थिति का अध्ययन

## मध्यमवर्गीय जीवन की विसंगतियाँ

स्वयं प्रकाश के लेखन में आम आदमी की वैचारिकता स्पष्ट झलकती है। यही आम आदमी कहीं महानगरीय तो कहीं कस्बाई परिवेश में अपनी समस्त दुर्बलताओं तथा सबलताओं के साथ उनके लेखन में चित्रित हुआ है। मध्यम वर्ग का उद्भव उद्योगों के प्रसार से शुरू हुआ है और औद्योगिकरण तथा नगरीकरण की प्रक्रिया के कारण एक नया वर्ग उभर कर सामने आया है। आर्थिक दुर्व्यवस्था से आक्रांत मध्यवर्ग की समस्याएँ अनवरत विस्तार पा रही हैं। स्वयं प्रकाश के उपन्यासों में भी विशेषतया ईंधन में मध्यवर्ग की समस्याओं का बहुत ही गहनता से चित्रण किया गया है जिसमें मध्यवर्गीय परिवार के संस्कार कुंठाओं और आर्थिक, सामाजिक विषमताओं का बड़ा ही प्रभावशाली चित्रण हुआ है। स्वयं प्रकाश के कथा साहित्य में चित्रित मध्यवर्गीय चेतना का अध्ययन निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत करेंगे–

## औद्योगिक सभ्यता में आत्मीय मानवीय संबंधों का ह्रास

औद्योगिक सभ्यता तथा शहरीकरण के बढ़ने से बड़े–बड़े नगरों में आत्मीय मानवीय संबंधों का ह्रास हुआ है व्यक्तिवादी प्रवृत्ति बढ़ने से मध्यवर्ग में अकेलेपन की समस्या और अधिक बढ़ी है। स्वच्छ जीवन जीने की अंधाधुंध प्रवृत्ति ने व्यक्ति को अकेलेपन से त्रस्त कर दिया है। स्वयं प्रकाश ने ईंधन उपन्यास में जहाँ महानगरीय परिवेश की समस्त जटिलताओं का समावेश किया है, वहीं व्यक्ति के अकेलेपन की समस्या को भी इंगित किया है, वे कहते हैं कि– हमें एक के बाद एक घृणा, हिंसा और पश्चाताप के दौरे पड़ रहे थे और हमारा साथ जीना एक अभिशाप जैसा बनता जा रहा था।

रोहित अपनी शिक्षा और कैरियर के प्रति सतत् जागरूक रहा, एक पर एक सीढ़ियाँ चढ़ता गया, वहीं स्निग्धा के जीवन में गृहणी का ठहराव आ गया है। बस यहीं से स्निग्धा के अकेलेपन की समस्या उपन्यास को घेर लेती है। बीना आंटी उन दिनों को याद दिलाती है जब स्निग्धा के पेट में बेटा आया था तब वह कहाँ थी? क्या उसने एक पल भी रूक कर यह सोचा कि एक अकेली औरत बच्चे को कैसे पालेगी? और जब बेटा पैदा हुआ तब वह कहाँ था? और अंत में रोहित भी अकेला रह जाता है और पछतावे के सिवा उसके पास कुछ नहीं रह जाता है। रोहित की असफलता उस समूची पीढ़ी की भी असफलता है जो बाजार के सपनों से मंत्रमुग्ध हो अपना भविष्य खोज रही है रोहित को स्वयं महसूस होता है कि उसने अपना हीरा जन्म कोड़ियों के मोल बेच दिया है– ‘अब मुझे किसी से कुछ नहीं पूछना है पार्टनर मैंने फैसला कर दिया है कि मुझे क्या करना है। अपनी जरूरत से कहीं ज्यादा पैसा कमाकर मैंने देख लिया है। इस तरह से तुम जितना कमाते हो उससे कहीं बहुत ज्यादा गँवा देते हो।

इसी तरह अकेलेपन का दंश झेल रही उत्तरजीवन कथा उपन्यास की नायिका है। इस उपन्यास में स्वयं प्रकाश ने स्वयं अपने को उपन्यास का नायक और उनकी पत्नी को नायिका के रूप में चित्रित किया है जो नायक की मृत्यु के बाद वैधव्य जीवन जीती है ऐसा जीवन जीने वाली स्त्री की क्या दशा होती है वह किस तरह अकेलेपन की समस्या से ग्रस्त है, इसको चित्रित किया है।

मध्यवर्गीय समाज में स्त्री को पुरुष के अभाव में असहाय, अपूर्ण एवं निरीह समझा जाता है। उसके साथ पुरुष की आवश्यकता पर बल दिया जाता है। पुरुष रूपी कवच ही उसे सामाजिक विसंगतियों से रक्षा प्रदान करता है। यही सोचकर स्वयं प्रकाश कहते है– क्यों हमारे सभ्य समाज में मुखिया की मृत्यु सारे परिवार को ध्वस्त कर देती है? संख्यातीत विधि–निषेधों की व्यवस्था करने वाला समाज यदि इन बच्चों को भी अपना बच्चा नहीं समझ सकता, तो फिर उसके होने का अर्थ ही क्या है? कौन सी जाति है? कौन–सा धर्म ? कौन–सी राष्ट्रीयता ? यदि इन्हें एक खुशनुमा इन्सान बनने की सुविधा देना किसी की जिम्मेदारी नहीं सिवा मेरे, तो फिर वे मुझसे कैसी भी अपेक्षा किस मुँह से करते हैं। फिर वह अपनी साथी मारिया ( प्रेत) के साथ अपनी पत्नी के लिए नये साथी की तलाश शुरू कर देते हैं।

## वर्तमान काल में स्त्री की स्थिति

वर्तमान काल में स्त्री की स्थिति व स्वरूप में बदलाव आया है। नारी ने पुरानी परम्परागत भूमिकाओं के स्थान पर नयी भूमिका को अपनाया है और उसमें सफल भी रही है। पारिवारिक क्षेत्र में ही नहीं बल्कि

सामाजिक क्षेत्र में भी जाग्रत व विकसित व्यक्तित्व दिखाई देता है। पुराने समय में नारियों का घर की दहलीज पार करना मुश्किल था, लेकिन आज नारी पुरुष के समकक्ष खड़ी है ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ नारी कार्य न करती हो जैसे–जैसे शिक्षा, जागरूकता, नारी चेतना, मुक्ति के स्वर पहले से अधिक मुखर होकर सामने आए हैं, वैसे–वैसे नारी के जीवन में बदलाव आए हैं, समाज में उपयुक्त स्थान मिलने लगा है। फिर भी मध्यवर्गीय नारी की स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई है।

दरअसल स्वयं प्रकाश स्त्री–विमर्श का झंडा उठाने वालों में अग्रसर नहीं है. फिर भी उन्होंने अपने कथा–साहित्य में स्त्रियों की जन समस्याओं को उठाया है, उससे यह बात साफ हो जाती है कि स्त्री की देह को कितनी सदियों तक हमने जागने नहीं दिया और आत्मा को भी कंपकपियाँ देते रहे। माँ स्त्री के पश्चाताप का शिलालेख नहीं...सोलह सौ मीटर की दौड़ का लास्ट लैप है। स्वयं प्रकाश द्वारा मध्यवर्गीय घरेलू स्त्री की स्थिति पर की गयी यह टिप्पणी पिताजी का समय कहानी में की गई है, जो स्त्री के सामाजिक इतिहास पर रची गई है। यह टिप्पणी उन्हें उन हाशिए पर खड़े लोगों से संयुक्त करती है, जो समाज की मुख्यधारा में रहे ही नहीं वे उन सबके पक्षधर घोषित हो जाते हैं। पति के अनुशासन में नीरस और एकरस जीवन जीने वाली माँ वृद्धावस्था में जब बेटे के घर पहुँचती है, तो उन्मुक्त होकर साँस लेती है। बहू के साथ अपनी आकांक्षाएँ साझा करती है, उसकी सुविधा और सुन्दरता पर जोर देती है। पुरुष अहंकारी अकेला और अपरिवर्तनीय होता है, जबकि नारी में उदारता, लचीलापन और सामंजस्य की क्षमता अधिक होती है।

बलि एक लंबी कहानी है। इसमें दिखाया गया है कि मध्यवर्गीय मानसिकता और आदतों वाली लड़की जब मेहनतकश स्थिति में ब्याह दी जाती है, तो उसका जीवन किस दारुण पीड़ा को पाता है। कहानी ग्रामीण और शहरी संस्कृति तथा निम्न और उच्च वर्गीय सभ्यता के तनावों व घरेलू नौकरानियों की जदोजहद की हैं। परिश्रमपूर्वक विजातीय संस्कृति को आत्मसात करती इन युवतियों को जीवन का कोई पुरस्कार नहीं मिलता, अपितु उन्हें अपनी जान गंवानी पड़ती है। वास्तव में युवतियाँ आत्महत्या नहीं करती है, बल्कि व्यवस्था की जड़ता, संवेदनहीनता व निर्ममता की बलिवेदी पर उनकी बलि चढ़ा दी जाती है। लड़की ऐसी ही सड़ी–गली व्यवस्था में थक–हार कर निराशा में आत्महत्या कर लेती है उसकी इच्छाएँ, कपड़े, गहने सब बक्से में पड़े ही रह जाते हैं, जो मालकिन के द्वारा दिए गए थे।

स्वयं प्रकाश उत्तरजीवन कथा उपन्यास में नारी चेतना का यथार्थ पेश करते हुए बताते हैं कि किस प्रकार वैधव्य प्राप्त उनकी पत्नी अपने पारिवारिक दायित्व को निभाती है, पत्नी ने मेरी जगह ले ली थी अपनी भूख–प्यास और थकान को पीछे धकेलकर और मेरी बेटियाँ भी इस कार्य में उसका साथ देती है, अब कोई जिद नहीं करती है। स्कूल में साल में एक बार मेला लगता था । हम जरूर जाते थे खूब हाहू बच्चे हर चीज के लिए जिद करते थे और पत्नी के विरोध के बावजूद मैं उनकी हर फरमाईश पूरी करता था। वे आज भी मेले में जाएँगे। बच्चियों का मन हर चीज को देखकर ललचाएगा, लेकिन वे किसी चीज की फरमाईश नहीं करेगी।

अगले जन्म अपेक्षाकृत एक सम्पन्न मध्यवर्गीय परिवार की कहानी है, जिसमें सुमि पहली बार माँ बनने वाली है और उसकी सास को सिर्फ पोता चाहिए, क्योंकि उनकी चारों संतानें लड़का ही है। सुमि के पति रवि इस वर्ग के अंतर्विरोधों के आदर्श हैं प्रगट में माँ–बाप की मूर्खता का मजाक उड़ाते – से पर मन ही मन उन्हें सही जैसा मानते। क्योंकि ससुर को पोता चाहिए, कारण, उनके खानदान में बरातें नहीं आती है, बरातें जाती है और जब सुमि को बेटी हो जाती है, तो रवि सोचता है– श्ये साली किसी और के पास तो नहीं जाती थी? यहाँ सास–ससुर का व्यवहार भी दर्शनीय है खबर सुनते ही सास हाथ की माला छोड़कर जाकर नहाकर खाट पर पड़ गई और ससुर जी ने बेटे की पीठ पर हाथ रख कर कोई बात नहीं कहा और सोने चले गये। स्वयं प्रकाश इसे सामन्ती मानसिकता तले कुचली जा रही एक मासूम लड़की के त्रास की कहानी मानते हैं, लेकिन यह इसके साथ ही मध्य वर्ग के नितान्त खोखलेपन को भी उघाड़ती है, जहाँ पढ़े–लिखे सम्पन्न लोग भी तंग सोच और घटियापन से समृद्ध है यह कहानी स्त्री संवेदना, स्त्री चेतना और स्त्री त्रासदी की गाथा है।

सूट कहानी में मध्यवर्ग के अछूत पहलू हैं, यहाँ स्वयं प्रकाश वर्ग विरोध, वर्ग घृणा और वर्ग चरित्र को सबसे ज्यादा कुशलता से उद्घाटित करते हैं ....... उनकी दृष्टि सामाजिक परिवर्तन को स्वीकार करती है ।

सूट कहानी का महत्व इसी एक तथ्य के लिए है। यह सूट मध्यवर्गीय जीवन के लिए आफत बन जाता है और इस आफत से मुक्ति तभी मिलती है जब सूट की थैलियाँ बन जाती है, जो अच्छी है मजबूत है, खूब काम आती है। कहानी में साधारण नवयुवक आर्थिक कारणों से अध्यापक बन जाता है। लेखक ने स्वयं उस पात्र से अपना बयान सुनवाया है– अच्छा, जो तुम बनाओगे, वही बन जाऊँगा। कुछ भी बन

ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in November 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

जाऊँगा, जिसमें परिवार का खड्डा भर जाए, वही बन जाना मंजूर अब चुनाव की सुविधा समाप्त अब पंख कई सारी डोरियों से बंधे हैं। गले में मध्यवर्गीय मजबूरियों का पट्टा पड़ गया। उस पर मेरा नाम लिखा है। वीरेंद्र मोहन ने कहानी की व्याख्या करते हुए लिखा है– यह कोट मध्यवर्गीय मजबूरियों का पट्टा है और जब इस मध्यवर्ग का सामना उच्च वर्ग से होता है, तब उसे अपनी औकात का पता चलता है।.... आखिर में सूट के बावजूद उसकी वर्ग आस्था उसे मध्यवर्गीय और उच्चवर्गीय बेहूदगियों और कमीनेपन से बाहर निकाल लाती है।

ईंधन उपन्यास की स्निग्धा मध्यवर्गीय नारी चेतना की वाहक है। वह घर चलाने में सहयोग करने के लिए एक कान्वेंट स्कूल में नौकरी कर लेती है। वहाँ बच्चियों के लिए शौचालय की मांग करती है जिसको प्रिंसिपल को मानना पड़ता है। प्रबंधक हमेशा से महीने का वेतन पच्चीस सौ रुपये पर हस्ताक्षर करवाके सभी अध्यापिकाओं को पंद्रह सौ रुपये देता है इसका कोई विरोध नहीं करता, क्योंकि वहाँ हमेशा से यही चल रहा था, लेकिन स्निग्धा ऐसा करने से साफ मना कर देती है। प्रबंधक के पूछने पर कि आपको प्रिंसिपल ने बताया होगा तो वह कहती है कि बताया होता तो मैं यहाँ नौकरी ही न करती। इसके बाद प्रबंधक पूरा पैसा देता है।

स्वयं प्रकाश का प्रथम उपन्यास ज्योतिरथ के सारथी वामपंथी राजनीति की दशा और दिशा का बोध करानेवाली यथार्थवादी दृष्टि से लिखी गयी रचना है, जिसमें लेखक ने भारत के समाजवादी साम्यवादी दलों के संघर्ष को प्रामाणिक रूप से अभिव्यक्त किया है। इन दलों के आन्तरिक भेदों और मतभिन्नता का एक विहंगम दृश्य प्रस्तुत किया है। सुधीश, चारुदा नागसेन, किरीट, कर्णिक, ज्योति और कॉमरेड अब्दुल्ला के माध्यम से वामपंथी राजनीति के आन्तरिक द्वन्दों को व्यंजित किया गया है।

आजादी के बाद स्वतंत्रता– पूर्व के सारे सपने ध्वस्त नजर आते देख सहृदय कथाकार की आत्मा विगलित होने लगी। जॉन की जगह गोविन्द को शोषण करते देख उन्हें काफी दुःख हुआ देश और समाज में वही पिछड़ापन, वही अशिक्षा और वही बदहाली है। गाँव के भोले लोग छल–कपट नहीं जानते हैं, अपने प्रति हो रहे शोषण का हाल नहीं जानते है इसलिए सब खुश हैं।

सब संतुष्ट हैं। सूखे के बावजूद अकाल के बावजूद शोषण के बावजूद। इसकी वजह यह है कि देश आजाद हो गया है. लेकिन आजादी का लाभ चन्द लोगों को ही मिल रहा है, जिसे सामान्य जनता गहराई से नहीं जान पाती है। स्वयं प्रकाश की यथार्थवादी दृष्टि इस विसंगति का अनुभव करती है। इसके अन्त के लिए वे क्रान्ति की आवश्यकता महसूस करते हैं कर्णिक के माध्यम से सुधीश की जिज्ञासा शान्त करते हुए कहलवाया जाता है हम कौन लोग है? यही जानना चाहते हो न तुम? बेशक हम मार्क्सवादी लोग हैं।

समाजवाद साम्यवाद के लिए क्रान्ति चाहने करने वाले तब हम भारत के किसी भी साम्यवादी दल में शामिल क्यों नहीं है? पहले एक ही पार्टी थी। बाद में सी.पी.आई. और सी.पी.एम. दो हुई। बाद में सी.पी. एम. से सी.पी.एम.एल. निकली जिसने किसान समस्या को केन्द्र में रखकर नक्सलवादी आन्दोलन चलाया। इस उपन्यास में वामपंथी राजनीति की यथार्थवादी दृष्टि को केन्द्र में रखकर लेखक ने पार्टी की राजनीति का प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत किया है। इसी आधार भूमि पर आगे चलकर उन्होंने अपना प्रसिद्ध उपन्यास बीच में विनयश लिखा। बीच में विनय के बीज यहाँ विद्यमान हैं।

इसमें चित्रित घटनाएँ यथास्थिति मात्र नहीं है, बल्कि यथार्थ को गया है। स्वयं प्रकाश ने जिन घटनाओं और पात्रों के सहारे इस जलते जहाज पर एक यथार्थवादी रचना है आधार बनाकर समाज की वास्तविकता का जीवन्त चित्रण किया उपन्यास की रचना की है, वे सब उनके बम्बई प्रवास का यथार्थ है इस बात का जिक्र उन्होंने अपने साक्षात्कारों, निबन्धों और आत्मकथात्मक पुस्तक धूप में नंगे पाँव में भी किया है वहाँ के लोगों से जुड़े रिश्तों और मिले हुए प्यार को वे कभी नहीं भूल पाये धूप में नंगे पाँव की भूमिका में उन्होंने लिखा है अब वो जमाना नहीं रहा, उसके किसी सूरत में लौटने की कोई सम्भावना भी नहीं और तेजी से बदलते इस मतलब परस्त दौर में उसकी स्मृतियाँ भी सुरक्षित नहीं मसलन सगे रिश्तों से बढ़कर परवान चढ़ती दोस्तियाँ और रूमानियत की दिलफरेब वादियों में ले जाती मोहब्बतें कठियल स्वाभिमान में पलटियाँ खाता नौजवानी का फिटमारापन और वस्तुओं से कहीं ऊपर जिन्दगी को पामाल करता कलाओं का रूहानी सुरूर![8] इनमें से कई दोस्त कई यादें और नौजवानी का एक आम हिस्सा बम्बई से सम्बद्ध है। मदन, जमीला, जतीन या नमिता काल्पनिक पात्र नहीं, बल्कि स्वयं प्रकाश के वैसे ही मित्र हैं, जिनपर उन्हें नाज है यथार्थ की इन घटनाओं को लेखक ने विचारों की आँच पर सिझाया है सैद्धान्तिक दृष्टि से परखा है तब जाकर साहित्यिक भाव–भूमि पर पुनर्सर्जन किया है।

## सांस्कृतिक परिवर्तन में परिवर्तन

आधुनिक परिवेश में सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों में आ रहे परिवर्तन और विपन का चित्रण स्वयं प्रकाश के कथा साहित्य में हुआ है। वर्तमान परिवेश में गाँव टूट रहे हैं और नगरीय जीवन में समा रहे हैं। परिणामस्वरूप वर्तमान समाज सांस्कृतिक दृष्टि से परिवर्तन और संक्रमण काल से गुजर रहा है। नगरीय जीवन में तो बहुत ही शीघ्र गति से परिवर्तन और विघटन हो रहा है शिक्षा, वैज्ञानिकता, भौतिक सुविधा आदि के कारण मनुष्य अधिकाधिक संवेदनाहीन बन रहा है। इसी कारण मनुष्य में स्थित करुणा, प्रेम, आत्मीयता लुप्त हो गई है और उसका स्थान स्वार्थीवृत्ति, क्रूरता, टूटन आदि ने लिया है। व्यक्ति स्वातंत्र्य और अधिकार की भावना तथा परिवार विघटन के कारण गाँव, घर टूट रहे हैं अन्याय–अत्याचार और शोषण की नित नई प्रणालियाँ एवं विकृत मानसिकता और विसंगतिपूर्ण व्यवहार से मानवीय जीवन विषमय बन गया है। ग्रामीण जीवन में आधुनिक मनोरंजन के साधनों द्वारा नई नगरीय संस्कृति और सभ्यता ने आक्रमण किया है व्यक्ति–व्यक्ति के बीच संवाद प्रक्रिया बंद हो गई है और व्यक्ति आत्मकेन्द्रित बनता जा रहा है। इस प्रकार के सांस्कृतिक परिवर्तन में महानगरों के संघर्षो की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी परिवर्तन का मनुष्य के आपसी सम्बन्धों पर प्रतिकूल तथा अनुकूल दोनों प्रकार का प्रभाव पड़ा है और मनुष्य अपने–आप में उत्तरोत्तर संकुचित होता जा रहा है।

स्वयं प्रकाश के उपन्यास ईंधन में बताया है कि वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में हमारे जीवन मूल्य तेजी से बदल रहे हैं। आज संस्कृति का स्वरूप स्थानीय न रहकर भूमण्डलीय हो गया है स्निग्धा रोहित से शादी के बाद जब छोटे से घर में रहने के बावजूद भी आठ अटैचमेंट वाला वैक्यूम क्लीनर खरीदती है, जो कि उसकी प्राथमिक आवश्यकता नहीं थी।

बीच में विनय उपन्यास में चित्रित किया है कि किस प्रकार समाज में परिवर्तन हो रहा है। लोगों ने घरों में फ्लश के पखाने बनवा रखे थे, लड़के ज्यादातर पढ़–लिखकर शहर चले जाते या पुश्तैनी काम–धंधों में लगे थे। संयुक्त परिवारों का आखिरी सीन चल रहा था और जमीनें जिस तेजी से बेंट रही थी या बनियों के हाथ बिक रही थी– पर्दा कभी भी गिर सकता था। कस्बे में कारें, घड़ियाँ, ट्रांजिस्टर, टेपरिकॉर्डर नेलपॉलिश, लिपिस्टिक, परफ्यूम और आयातित भौंड़ापन आने लगा मास्टर को मकान मिलना मुश्किल था. थानेदार को आसान कलाकार साइन बोर्ड बना रहे थे, सटोरिये म्युनिसिपल बोर्ड कस्बे की दीवारें तरह–तरह के रंगीन पोस्टरों, विज्ञापनों से सजने लगी, बसें बढ़ गई, रेल रुकने लगी, मास्टरों की पिटाई होने लगी लड़कियों भागने या भगाई जाने लगी महिलाएँ नौकरी करने लगी तथा लोगों को नई और आधुनिक बीमारियाँ होने लगी। चेतना एक आँधी की तरह आई और पुराना बहुत कुछ तोड़–फोड़ गई और नया बनाने की चुनौती सामने फेंक गई।

जलते जहाज पर उपन्यास में बताया है कि वर्तमान में किस प्रकार समाज में सांस्कृतिक परिवर्तन हो रहे हैं उपन्यास का नायक दीपक अपने छोटे शहर को छोड़कर महानगर बम्बई में अपनी माँ की सहेली जूली चाची के यहाँ जाता है, वह उनके घर को आरामगाह कहता है, क्योंकि वहाँ प्यार नहीं है सिर्फ औपचारिकता है। रहने को तीन जन घर में रहते हैं, जूली चाची, चाचा और नमिता तीनों कभी आपस में घुल मिलकर नहीं रहते उनके सम्बन्धों में अल्हडपन नहीं है। चाचा, दीपक और नमिता की हंसी–ठिठोली को गलत समझ बैठते हैं, इसके लिए नमिता की पिटाई भी कर देते हैं, यहाँ तक कि उसे पढ़ने के लिए दूसरे शहर भेज देते हैं स्वयं चाचा–चाची भाग कर शादी किए थे, मगर अपनी बेटी का किसी से हँस कर बात करना बर्दाश्त नहीं है।

## रीति–रिवाज एवं कुप्रथाएँ

भारतीय समाज में अनेक परम्पराएँ रीति–रिवाज और रस्मों का प्रचलन दिखाई देता है भारतीय संस्कृति में रीति–रिवाजों का महत्वपूर्ण स्थान है। ये रीति–रिवाज हमें विरासत में मिली हैं। प्रत्येक जाति, समाज और प्रदेश में कुछ विशिष्ट रीति–रिवाज प्रचलित होते हैं। इन प्रथा और रस्म–रिवाजों के पीछे मूलतः परम्परा कार्यरत रहती है। ये परम्पराएँ शास्त्र संभव होती गई तथा रस्में और संस्कार बन गई। समय–समय पर बदलते हुए सामाजिक परिवेश एवं चिंतन से प्रभावित होने पर भी इनकी मूलभूत आवश्यकता कभी समाप्त नहीं हुई, इसलिए इनका प्रचलन आज तक अक्षुण्ण बना हुआ है। लेकिन आज कुछेक रीति–रिवाज नष्ट हो गए हैं, वे अपनी सामाजिक सार्थकता खो बैठे थे। रीति–रिवाज हमारी सांस्कृतिक धरोहर और पहचान के रूप में विकसित हो गए। गाँवों में इन रीति–रिवाजों के प्रति लोग आस्थावान रहते हैं, इनका स्थायी और महत्वपूर्ण स्थान है।

स्वयं प्रकाश के कथा साहित्य में हिन्दू व मुस्लिम समाज जीवन और उनके धर्म संबंधी रीति–रिवाजों का जिक्र हुआ है। इसके अन्तर्गत धार्मिक प्रथा–परम्परा और रूढ़ मान्यताओं के साथ अंधविश्वासी कुप्रथाओं का प्रचलन है।

वर्तमान युग में हमारे शहर बदलते ही संस्कार बदलने लग जाते हैं। हम पुराने शहर व रीति–रिवाजों को आउट डेटेड समझने लगते हैं। एक नई संस्कृति व नई दिनचर्या के अभ्यस्त हो जाते हैं। 'ईंधन' उपन्यास में रोहित के बम्बई जाते ही उसके संस्कारो व सोच में भी परिवर्तन आने लगता है– "खासकर महिलाओं के बारे में तो मेरी सोच ही जैसे बदल गयी। मैं परंपरापोषित परिस्थिति पुत्र यही मानता था कि आदमी कमाकर लाता है और औरत उड़ाती है, आदमी खटता है और औरत खिलाती है, आदमी जुटाता है औरत बनाती है, आदमी पाता है औरत पालती है, आदमी चलाता है औरत चलती है, इसी तरह की होती है दुनिया। मैंने कभी किसी महिला के साथ कहीं काम किया नहीं था। कामकाजी स्त्रियाँ देखी तो बहुत थी......। पहले एक औरत होती थी जो किसी की पत्नी या माँ होती थी, जो साड़ी या सलवार–कमीज पहनती थी, जूड़ा या चोटी बनाती थी...... जिनके दाँत...... जिनके स्तन.....जिनके नितंब.... । यहाँ इस सब का जैसे कोई काम ही नहीं था, कोई भूमिका ही नहीं थी, नाक–दाँत–बाल–नितंब का कोई मतलब नहीं था... वे एक व्यक्ति थी, एक सहकर्मी, एक मित्र पहली बार, एक सम्पूर्ण–सहज–स्वाभाविक मानवीय इकाई, जिससे सहज रूप से बातचीत की जा सकती है, शिकायत की जा सकती है, निस्संकोच कुछ माँगा जा दिया या पूछा या बताया जा सकता है, शालीनता का थोड़ा ध्यान रखते हुए यदाकदा हँसी–मजाक भी किया जा सकता है और बातचीत, मेल–मुलाकात के बाद उनके बारे में सोचना जरूरी भी नहीं रहता। वह हर समय आपकी चेतना पर लदी नहीं रहती।

## धार्मिक युगबोध

स्वातंत्र्योत्तर युग से धार्मिकता की भावना बहुत कुछ ऊपरी वस्तु बन गई है। आत्मा से इसके सम्बन्ध टूट गए हैं। धर्म दिनोंदिन शक्तिहीन होता जा रहा है, जीवन में भौतिकवादी आग्रह बढ़ता जा रहा है। यदि धर्म कहीं शेष भी है तो उसमें उसकी अशक्तियों के ही दर्शन होते हैं। भारतीय समाज के संदर्भ में तो यह बात और भी सच है कि यहाँ ब्राह्मचार एवं अंधश्रद्धा, सवर्ण–निम्नवर्ग आदि धर्म के प्रतीक मात्र रह गए हैं। स्वयं प्रकाश के उपन्यासों में भी धार्मिक युगबोध का समावेश हुआ है। स्वयं प्रकाश ने धर्म के नाम पर पनप रही विसंगतियों पर कुठाराघात किया है। बीच में विनय उपन्यास में उन्होंने धर्म का विषय उठाया है– विनय के पापा जिस कारण से धार्मिक जीवन को आत्मसात करते हैं वह यह दर्शाता है। कि धर्म किस प्रकार हताश, निराश व आत्महंता और आत्म अपराध बोध से ग्रस्त व्यक्ति के तमाम तरह के अमानवीय व्यवहार को वैधता प्रदान करता है।

साथ ही धर्म तो वर्गीय समाजों के आर्थिक राजनीतिक हितों को धार्मिक जामा पहनाकर उनकी भावनाओं का सामाजिकरण करता है सवर्णों के मोहल्ले में नगर पालिका द्वारा पिछड़ों एवं मजदूरों को प्लॉट देने के निर्णय से सवर्ण जिस प्रकार शीतला मन्दिर के मुद्दे को माध्यम बनाकर विरोध करते हैं, धार्मिक यात्राएँ निकालते हैं, दिखाते हैं कि धर्म के माध्यम से व्यक्तित्व कैसे अपनी सामाजिक पहचान को तिरोहित कर देता है किसकी पूजा करें? देवी–देवताओं की जिन्हें हमने खुद बनाया? सरस्वती की जो वीणा बजाना तो दूर, पकड़ना भी ठीक ढंग से नहीं जानती, हर जगह उसे सितार की तरह पकड़े रहती है? गणेश की जिसे चूहे जैसे जानवर पर बैठने में संकोच नहीं होता? या हनुमान की– जो नाखून से छाती फाड़कर अंदर रखा सिंहासन और उस पर बैठे राजा राम और रानी सीता की झांकी दिखा रहे हैं? और ताज्जुब कि जिनका दिल बीचोंबीच में है? या राम की जो अपनी गर्भवती पत्नी को धोखे से जंगल में भेज रहे हैं।

भैया देखो ये जितने देवी–देवता हैं सब हमारे यानी मनुष्य रूप में गुणों–प्रवृत्तियों की कल्पना! सिर्फ समझाने के लिए जैसे सच बोलना चाहिए तो एक सत्यनारायण बना दिए लीलावती कलावती की कहानी बना ली जैसे पेड उपयोगी चीजें हैं उन्हें नष्ट नहीं करना चाहिए तो सीतला माता बना दी कि पेड़ों को पानी दो उनकी पूजा करो पशुओं को नष्ट करने से कोई फायदा नहीं।... पर गड़बड़ की अनपढ़ पेंटरों ने और मतलबी पंडों ने, जो लोगों को नासमझ ही रखना चाहते थे, ताकि उनकी भेंटपूजा बरकरार रहे। क्यों? क्या सोचते हो? समाज में फैल रही इस धार्मिक कटुता के प्रभाव को जितनी बारीकी से स्वयं प्रकाश ने देखा है, शायद किसी दूसरे रचनाकार ने नहीं देखा होगा। इस धार्मिक कटुता के कई रूप हैं इसलिए वह हमारे जीवन में, आचरण में, सोच में जगह–जगह घुसी है और समय पाकर प्रकट हो जाती है।

## साम्प्रदायिकता

भारतीय राजनीतिक इतिहास में हिन्दुस्तान–पाकिस्तान का बँटवारा एक ऐसी निर्णायक घटना है जिसमें दोनों ही देशों के लोगों को सामाजिक–आर्थिक–राजनैतिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर प्रभावित किया। इस विभाजन का आधार धार्मिक था लेकिन इसी ने साम्प्रदायिकता और राष्ट्रीयता को जन्म दिया। इन्हीं

दो कारणों की वजह से विभाजन के बाद से आज तक भारत में साम्प्रदायिकता न केवल अपने अस्तित्व में रही बल्कि यह लगातार जटिलता की ओर भी बढ़ती रही।

इस सतत् चलने वाले संघर्ष की जरूरत के लिए स्वयं प्रकाश ने लगातार अपनी कहानियों में साम्प्रदायिकता, जातिवाद और वर्गभेद पर प्रहार किया है। स्वयं प्रकाश साम्प्रदायिकता को अधिकार चेतना का एक विकृत स्वरूप मानते हैं। इस नजरिए से वे आगे यह भी साफ करते हैं कि साम्प्रदायिकता सिर्फ हिन्दू–मुसलमान का मसला नहीं है। यह बहुसंख्यकों की धौंस है जो अल्पसंख्यक समुदाय के नागरिकों को बराबर का इंसान नहीं समझना चाहते। साम्प्रदायिकता की काया और उसका व्यवहार कहीं अधिक व्यापक और विशाल है क्योंकि स्वयं प्रकाश साम्प्रदायिकता को हिन्दू और मुसलमान तक सीमित न रखकर उसमें दलितों और सिखों को भी शामिल करते हैं। यह अपने आप में एक ऐसा विषय है, जिसे शायद स्वयं प्रकाश ने पहली बार अपनी रचनाओं में उठाया।

पार्टीशन कहानी को साम्प्रदायिकता की पहचान करने में सर्वाधिक समर्थ रचनाओं में माना जाता है। पार्टीशन कहानी में स्वयं प्रकाश भारत जैसे देश में मुस्लिम होने का क्या मतलब है की बहुत मार्मिक और पीड़ादायक तस्वीर खींचते हैं। एक मुस्लिम चाहकर भी एक हिंदुस्तानी बनकर नहीं रह सकता है। मुस्लिमों के प्रति फैलायी जा रही घृणा का स्तर इतना ज्यादा है कि वह एक मुसलमान को अपनी हदों में रहने को बाध्य करता है। हिन्दू समाज उसकी हदें मियां होने को तय करता है। लेखक पार्टीशन को उनके जीवन में रोज घटने वाले एक दर्दनाक हादसे के तौर पर देखते हैं।

## धार्मिक अंधविश्वास

पढ़ा–लिखा समाज आज भी अंधविश्वासों, धार्मिक पाखण्डों में जकड़ा है। धर्म के प्रति आस्था होना व्यक्तिगत बात है लेकिन वही धर्म जब समाज और थी और कोने में एक झाडू से उन्हें इकट्ठा करके बालों को लम्बाई और रंग के आधार पर छाँटा जा रहा था। मुझे बताया गया कि इनकी खूबसूरत विग बनेंगी जिनका निर्यात किया जायेगा और पैसा कमाया जायेगा। बाल कटाने के लिए भी वहाँ टिकट लेना पड़ता था और टिकट सरकार लगाती थी।

इससे पता चलता है कि समाज में अंधविश्वास कितना फैला हुआ है और आज भी हम उन्हीं परम्पराओं का अनुसरण करते आ रहे हैं। लेकिन आधुनिक युग में हम सभी का यह धर्म है, कर्तव्य है, नैतिकता है कि हम इस तरह के अन्यायों और अंधविश्वासों का विरोध करे, आज से पचास साल पहले का समाज आज से भी ज्यादा दकियानूसी रहा होगा और तब दयानंद सरस्वती ने कहा था कि जो भगवान चूहे से अपनी रक्षा नहीं कर सकता वो तो पत्थर है, किस साहस के साथ उन्होंने कहा होगा? ऐसा ही साहस वर्तमान युग में जुटाना होगा समाज के लोगों को।

## निष्कर्ष

स्वयं प्रकाश के लेखन में आम आदमी की वैचारिकता स्पष्ट झलकती है। यही आम आदमी कहीं महानगरीय तो कहीं कस्बाई परिवेश में अपनी समस्त दुर्बलताओं तथा सबलताओं के साथ उनके लेखन में चित्रित हुआ है। मध्यम वर्ग का उद्भव उद्योगों के प्रसार से शुरू हुआ है और औद्योगिकरण तथा नगरीकरण की प्रक्रिया के कारण एक नया वर्ग उभर कर सामने आया है। आर्थिक दुर्व्यवस्था से आक्रांत मध्यवर्ग की समस्याएँ अनवरत विस्तार पा रही है। स्वयं प्रकाश के सभी उपन्यासों में यथार्थवादी दृष्टि की झलक मिलती है। 'ज्योतिरथ के साथी' और 'जलते जहाज पर' उनके आरम्भिक उपन्यास हैं, फिर भी उनमें यथार्थवाद का व्यापक रूप नजर आता है। भारतीय राजनीतिक इतिहास में हिन्दुस्तान–पाकिस्तान का बँटवारा एक ऐसी निर्णायक घटना है जिसने दोनों ही देशों के लोगों को सामाजिक–आर्थिक–राजनैतिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर प्रभावित किया। इस सतत् चलने वाले संघर्ष की जरूरत के लिए स्वयं प्रकाश ने लगातार अपनी कहानियों में साम्प्रदायिकता, जातिवाद और वर्गभेद पर प्रहार किया है। स्वयं प्रकाश साम्प्रदायिकता को अधिकार चेतना का एक विकृत स्वरूप मानते हैं। स्वयं प्रकाश के उपन्यासों में धार्मिक युगबोध का समावेश भी हुआ है। स्वयं प्रकाश ने धर्म के नाम पर पनप रही विसंगतियों पर कुठाराघात किया है। बीच में विनय उपन्यास में उन्होंने धर्म का विषय उठाया है– विनय के पापा जिस कारण से धार्मिक जीवन को आत्मसात करते हैं वह यह दर्शाता है।

## संदर्भ

[1] हजारीप्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण – 2007 ई., दशम खण्ड, पृ. सं. – 146–147.

[2] मैनेजर पाण्डेय, आलोचना की सामाजिकता, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण – 2012 ई., पृ० सं.–243.

[3] स्वयं प्रकाश, ज्योतिरथ के सारथी, धरती प्रकाशन, बीकानेर, प्रथम संस्करण, 1982 ई., पृ० अप. –66.

[4] वही, पृ० सं०–34–35.

[5] स्वयं प्रकाश, धूप में नंगे पाँव, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2019 ई., भूमिका, पृ.सं.–7.

[6] स्वयं प्रकाश, जलते जहाज पर प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, प्रथम संस्करण, दिसम्बर 1982 ई०, पृ. सं.–32.

[7] स्वयं प्रकाश, उत्तर जीवन कथा, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण – 1993 ई., पृ. सं.– 27.

[8] वही, पृ० सं.–50.

[9] राजेन्द्र यादव, कहानीरू स्वरूप और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–2013 ई., पृ.सं.–78.

[10] स्वयं प्रकाश, बीच में विनय, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण – 2002 ई. पृ. सं.–201–201.

[11] पल्लव (सम्पादक), बनास, प्रवेशांक, बसन्त 2008 ई., परमानन्द श्रीवास्तव का आलेख – एक राजनीतिक उपन्यास के निहितार्थ, पृ. सं.– 229.

[12] स्वयं प्रकाश, ईंधन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण–2008 ई०, पृ. सं.–233.